तोड़-तोड़ के बन्धनों को, देखो बहनें आती हैं ...

सुदूर आदिवासी अंचल से उदयपुर आकर आशा सहयोगिनी बनी गीता गरासिया की कहानी

"मेरा नाम गीता गरासिया है। मैं कोटड़ा तहसील (जिला- उदयपुर) की बेड़ाधर पंचायत के खोलिया फला गाँव की रहने वाली हूँ। मेरा घर उदयपुर शहर से लगभग १०० किलोमीटर दूर है। मेरे पूरे गाँव में मैं पहली लड़की हूँ, जिसने दसवीं और फिर बारहवीं पास की। सात भाई बहिनों में मेरा नंबर चौथा है। मुझसे बड़ी तीन बहनें हैं। हमारे पास एक छोटी सी खेती की ज़मीन है, जिस पर हम मक्का, उड़द और गेंहू उगाते हैं।

बचपन से मेरी एक जैसी दिनचर्या रही।मैं सुबह बकरियां चराती, छोटे भाई बहनों को संभालती और जंगल से लकड़ियाँ भी लाती। मेरा घर एक पहाड़ी पर है। घर से आधा किलोमीटर नीचे उतरकर नदी और हैंडपंप से पानी भरना भी मेरा और मेरी बहन का काम था।मेरे गाँव में पिछले साल ही सोलर बिजली पहुंची है। जंगल की ज़मीन होने के कारण हमारे यहाँ बिजली के खम्भे नहीं लग सकते।गाँव तक जाने के लिए मुख्य सड़क से ३ किलोमीटर कच्ची पगडण्डी पर पैदल चलना पड़ता है।पांचवीं तक का स्कूल तो गाँव में ही था, उसके बाद ३ किलोमीटर दूर पंचायत तक आकर आठवीं तक पढ़ाई की। जब घर वालों ने घरेलू काम और बकरियां चराने के लिए दबाव डाला तो आगे नियमित छात्रा के तौर पर कभी स्कूल नहीं गयी। मेरे घर वाले मुझे मज़दुरी के लिए मेरी बहनों के साथ गुजरात भेजना चाहते थे। मैंने मना कर दिया। मेरी ज़िद रंग लाई। पर मैं अपनी बहनों को गुजरात जाने से नहीं रोक पाई। मैंने घर के काम करते- करते पहले दसवीं और फिर बारहवीं प्राइवेट (पत्राचार) पास की। मैं आगे पढ़ाई करके नौकरी करना चाहती थी,पर घर वाले तैयार नहीं थे।दिन ऐसे ही गुज़र रहे थे।

इसी दौरान मुझे पता चला कि मेरे मामा का लड़का उदयपुर में रहकर पढ़ाईकर रहा है। मुझे उदयपुर आना था।मेरे परिजनों को मुख्य चिंता मेरी सुरक्षा को लेकर थी। उन्हें यह भी चिंता थी कि एक पहाड़ी गाँव से सीधे शहर की चकाचौंध में उनकी बच्ची कहीं भटक न जाए। किन्तु मेरी दृढ़ता को देखते हुए उन्होंने भाई के साथ उदयपुर रहकर पढ़ाई की स्वीकृति दे दी।यहाँ रहते हुए मैंने सबसे पहले मीरा कन्या महाविद्यालय में कला संकाय में प्राइवेट छात्रा के तौर पर फॉर्म भरा।यही रहते हुए कंप्यूटर चलाना सीखा।मैं थोड़ी सिलाई जानती हूँ तो उदयपुर में रहने लायक गुज़ारा हो रहा था। किराया मामा भर देते थे।

जहाँ मैं भाई के साथ किराये पर रहती थी, वहां पास में ही आंगनवाड़ी केंद्र चलता था। मैं अक्सर देखती कि केंद्र की सहायिका बच्चों को घर-घर से बुलाकर केंद्र तक ले जा रही है। ऐसे में केंद्र को लेकर मेरी जिज्ञासा बढ़ी। मैं जब भी वक़्त मिलता,आंगनवाड़ी जाने लगी। यूँ तो आंगनवाड़ी मेरे गाँव में भी थी, पर मैंने उसे कभी नियमित रूप सेखुलते नहीं देखा था।

इसी दौरान एक दिन पता चला कि आंगनवाड़ी केन्द्रों पर आशा सहयोगिनी के पदों के लिए भर्ती हो रही है। मुझे लगा कि यही उपयुक्त समय है, जब मैं नौकरी कर सकती हूँ। मैंने फॉर्म भर दिया।नियत दिन पर इंटरव्यू हुआ और मेरा आत्मविश्वास और ज्ञान देखते हुए मुझे नौकरी मिल गयी।

आज मैं स्वराज नगर आंगनवाड़ी केंद्र में आशा के पद पर कार्यरत हूँ। मैं काम के साथ साथ पढ़ाई भी कर रही हूँ।इस साल मेरी स्नातक डिग्री पूरी हो जाएगी। मेरा सपना है कि मैं पढ़कर ANM बनूँ। मेरे आंगनवाड़ी केंद्र में कुल ९ ६नामांकित बच्चे और १ ६गर्भवती- धात्री महिलाएं है। मैं इनकी हर महीने घर जाकर जांच करती हूँ और सही खान-पान और स्वच्छता के लिए प्रेरित करती हूँ। मैं गर्भवती महिलाओं को डिलीवरी के लिए अस्पताल तक भी लेकर जाती हूँ।कोविड-19 के दौरान मैंने पिछले दो साल खूब मन लगाकर काम किया। इस दौरान लगभग एक साल तो मैं अपने गाँव भी नहीं जा पाई।

मुझे गर्व है कि मेरे गाँव की मैं पहली लड़की हूँ, जिसने नौकरी की। जब कभी गाँव जाती हूँ तो गाँव वाले गर्व करते हैं। मुझे काम करता देख कई और लड़कियों ने प्राइवेट से दसवीं और बारहवीं के परीक्षा फार्म भरे हैं। वे घर रहकर पढ़ाई करती है। मैं उनके लिए एक आशा की किरण हूँ। मैं उन्हें कहती हूँ कि पढ़ाई करो। बिना पढ़ाई आगे कुछ नहीं।

और हाँ, एक और मजेदार बात, मैंने आज भी अपनी पारंपरिक गरासिया पोशाक पहनना नहीं छोड़ा है। यह पोशाक मुझे शक्ति देती है। कई लोग कहते हैं कि शहर में रहती हो तो उसी के अनुसार कपड़े पहनो। पर मुझे मेरी गरासिया पोशाक ज्यादा अच्छी लगती है। यह मुझे अपने गाँव और समुदाय से जोड़े रखती है। अब मेरी पोशाक ही मेरे क्षेत्र और विभाग में मेरी पहचान बन गयी है।"

अर्बन95 द्वितीय चरण परियोजना के अंतर्गत फ़िलहाल व्यवहारगत अध्ययन (रैपिड बिहेवियर असेसमेंट) की प्रक्रिया चल रही है। इसी दौरान टीम विषय आधारित चर्चाएं (फोकस ग्रुप डिस्कशन) आयोजित करने अलग अलग आंगनवाड़ी केन्द्रों, पार्क, अस्पताल आदि जगह जा रही है। इसी दौरान टीम की मुलाकात गीता गरासिया से हुई। गीता आशा सहयोगिनी है। गीता जिस आदिवासी जनजाति समुदाय से आती है, वहां ज्यादा पढ़ाई करने का चलन आमतौर पर देखने को नहीं मिलता। ऐसे में टीम ने गीता से बात की और उसके अनुभवों को सुना। एक "गरासिया जनजातीय" युवती का सुदूर आदिवासी क्षेत्र से निकलकर उदयपुर आना और यहाँ रहकर काम करना वाकई एक मिसाल और अन्य किशोरियों के लिए प्रेरणा है।

गरासिया जनजाति अब भी शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं से कोसों दूर: राजस्थान के उदयपुर और सिरोही तथा गुजरात के साबरकांठा जिले की निवासी गरासिया जनजाति आज भी पूरी तरह से वन में रहने वाली जनजातियों में से एक है। उदयपुर जिले की कोटडा तहसील गरासिया जनजाति के कारण अपनी एक अलग पहचान रखती है। अपने सामाजिक ताने-बाने और रीति-रिवाजों के लिए मशहूर यह जनजाति अभी शहरीकरण और अन्य सुविधाओं से कोसों दूर है। मूलतः खेती बाड़ी और वनोपज ही इनका आजीविका का साधन हुआ करता था किन्तु अब गरासिया समुदाय के युवा गुजरात जाकर मजदूरी करने लगे हैं। ये लोग वहां कपास के खेतों और छोटी मोटी मिलों में काम करते हैं।

कोटडा तहसील को आज भी राजस्थान में "काला पानी" कहा जाता है, जहाँ कोई अधिकारी रहना नहीं चाहता। सरकार के प्रयासों और सैकड़ों स्वयंसेवी संस्थाओं के काम करने के बावजूद भी आज भी वहां शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ है। यहाँ किशोर किशोरियों में ड्राप-आउट दर काफी अधिक है। आठवीं और दसवीं के बाद अधिकांश किशोर किशोरियां पढ़ाई छोड़कर काम में लग जाते हैं।उदयपुर से कोटड़ा तहसील मुख्यालय की दूरी लगभग ११५ किलोमीटर है।

(आलेख: ओम, अर्बन95 द्वितीय चरण, इकली साउथ एशिया)